A-PDF Image To PDF Demo. Purchase from www.A-PDF.com to remove the watermark

पढ़ो, बढ़ो भारत-सन्तान । हृदय धरो माताका ध्यान ॥
तुमहीं पर आशा है सारी । सुख निरखे भारत महतारी ॥

अष्टम् वर्ष } प्रयाग, जनवरी, सन् १९२३ { प्रथम अङ्क

नये वर्ष का स्वागत

नया वर्ष अब आया है ।
गये वर्ष में,
बड़े हर्ष में,
खेला और खेलाया है ।
नया वर्ष अब आया है ॥

नये वर्ष का स्वागत

दिन वह बीता,
बाजी जीता,
सबका मन बहलाया है ।
नया वर्ष अब आया है ॥

नया रङ्ग है,
नया ढङ्ग है,
नूतन साज सजाया है ।
नया वर्ष अब आया है ॥

स्वागत प्यारे,
ला सुख सारे,
मन मेरा ललचाया है ।
नया वर्ष अब आया है ॥

भक्ति भाव से,
बड़े चाव से,
सादर शीश झुकाया है ।
नया वर्ष अब आया है ॥

—श्रीनाथ सिंह

—:o:—

मुन्नी और लाल

आ मेरे पींजड़े के लाल,
बाहर फिरता क्यों बेहाल।
मोहन भोग खिलाऊँगी मैं,
शर्बत तुझे पिलाऊँगी मैं।
चलते चलते थक जावेगा,
बन में क्या रोटी पावेगा।
भूख लगेगी क्या खावेगा,
रो रो कर तू मर जावेगा।
खोल खोल तू अपने मुखको,
झटपट कह दे मुझसे दुखको।
कभी न तुझको मारा पीटा,
नहीं पकड़ कर कभी घसीटा।
भगते भगते पैर पिराने,
लौट लौट अब तो दीवाने।
कहीं चील तुझ को पावेगी,
कच्चा ही चट कर जावेगी।

क्यों न मानता तुझे मनाऊँ,
तेरे पीछे पीछे आऊँ।
देख पड़ा तेरा घर खाली,
आजा वेगि लगा दूँ ताली।
देख बुलाती मुन्नी बाई,
द्वार खुला है आजा भाई।
नहीं देखता मेरी ओर,
क्यों तू इतना हुआ कठोर।
कैसा है गुदगुदा बिछौना,
आकर सोजा लाल सलोना।
चल सोने से चोंच मढ़ाऊँ,
घुंघरू कंठी भी पहनाऊँ।
देर हो गई जल्दी आजा,
रूठ गया क्यों मेरा राजा।
देख पींजड़े में फल ताजा,
और धरा है पेड़ा खाजा।

—बालकवि

Jan 1923

बौड़म शर्म्मा

किसी नगर में एक वैद्य थे बहुत पुराने ।
दूर दूर के रोगी आते दवा कराने ॥
अच्छे हो हो कर वे अपने घर जाते थे ।
देश देश में वैद्यराज का यश गाते थे ॥
बहुधा उनके पास छात्र गण पढ़ने आते ।
बड़े प्रेम से वह भी वैद्यक उन्हें सिखाते ॥
छात्र हो गये बहुत वैद्यवर इनसे पढ़कर ।
कोई तो हो गये चतुर इनसे भी बढ़ कर ॥
किन्तु एक बौड़म शर्म्मा पढ़ने को आया ।
वैद्यराज के साथ बहुत कुछ समय बिताया ॥
विद्या का था शत्रु बुद्धि का बैरी भारी ।
बनता था अति चतुर किन्तु था महा अनारी ॥
खाता पीता, डण्ड मजे में पेला करता ।
बेशहूर था व्यर्थ रात दिन खेला करता ॥
कभी साल में एक बार जब आता मन में ।
पोथी पत्रे खोल सभी पढ़ जाता छन में ।

पहलवान ने वैद्यराज क आज्ञा पाकर ।
मारी घन की चोट ज़ोर भरपूर लगाकर ।

Jan 1923

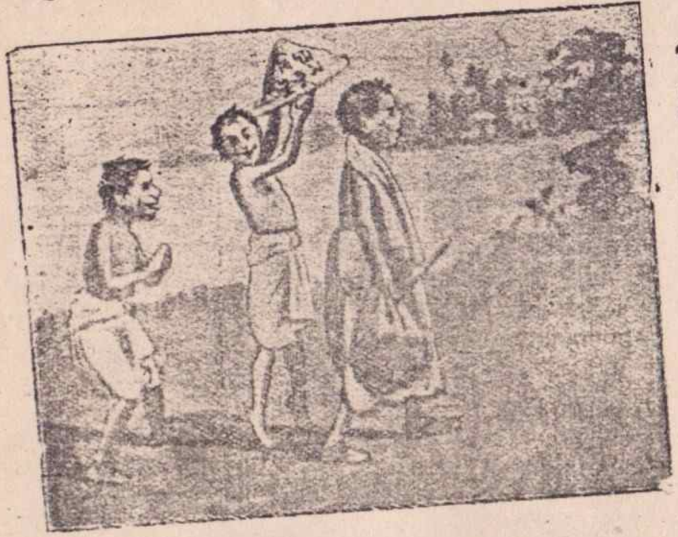

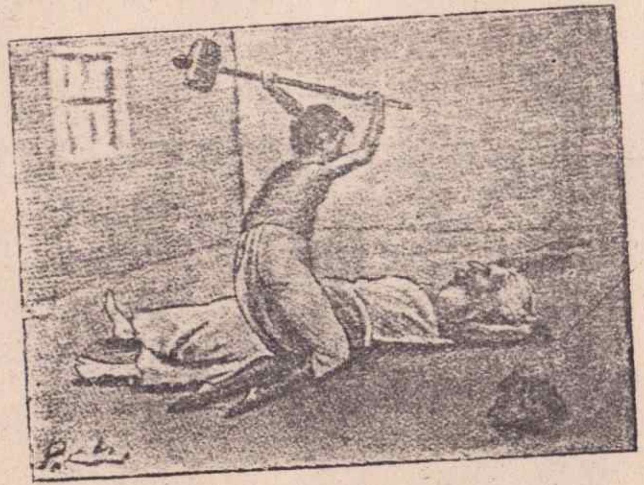

ले आया घर [illegible] चला बौड़म मनमानी बौड़म भी चल पड़े मौज से गाते गाते ।

एक रोज जब वैद्यराज थे उसे पढ़ाते ।
आया एक सवार वहाँ ऐसा चिल्लाते ॥
वैद्य महोदय राजा ने है तुम्हें बुलाया ।
हाथी है बीमार मौत के मुँह में आया ॥
अगर हो गया अच्छा वह हाथी बेचारा ।
पाओगे तुम छत्र एक सोने का न्यारा ॥
सुन कर राजा के सवार का सारा कहना ।
गले दुपट्टा डाल वैद्य ने जूता पहना ।
ले बौड़म को साथ चले हाथी ढिग आये ॥
देखा उसको पड़ा हुआ है गला फुलाये ॥
किसी तरह से पता रोग का उनने पाया ।
घन मँगवायी, पहलवान भी एक बुलाया ॥
बोले फिर यों पहलवान से"—देखो आओ ।
"गर्दन पर हाथा के घन की चोट जमाओ ॥"
पहलवान ने वैद्यराज की आज्ञा पाकर ।
मारी घन की चोट ज़ोर भरपूर लगाकर ॥
खाकर पूरी चोट दुखी हाथी चिल्लाया ।
फौरन चंगा हुआ रोग का हुआ सफाया ॥

समाचार यह फौरन ही राजा तक फैला ।
वैद्यराज्य को मिला मोहरों का फिर थैला ॥
सोने का वह छत्र वैद्य जी के सर ताने ।
बौड़म भी चल पड़े मौज से गाते गाने ॥
मन में किया विचार दवा यह सबसे भारी ।
सीख इसे हो गई पढ़ाई खतम हमारी ॥
अतः शीघ्र ही वैद्यराज से आज्ञा पाकर ।
बौड़म शर्मा वैद्य बने अपने घर जाकर ॥
हाथी ने तरबूज बिना कुचले था खाया ।
अटक गले के बीच उसी ने दर्द बढ़ाया ॥
वैद्यराज ने जान यही था घन मँगवाया ।
इस प्रकार तरबूज उन्होंने था तुड़वाया ॥
किन्तु न इसका असल भेद बौड़म ने जाना ।
फिर भी करना दवा मूर्ख ने सबकी ठाना ॥
बौड़म बौड़म कह उनको सब लोग चिढ़ाते ।
कभी न कोई रोग उन्हें अपना दिखलाते ॥
योंही जाती थी फजूल यह विद्या सारी ।
शर्मा जी को रंज बड़ा था इसका भारी ॥
घर ही में बीमार पड़ी थी उनकी नानी ।
सोचा पहले उचित उसी की जान बचानी ॥

दैवयोग से उसके भी गिलटी गरदन में ।
फूल फूल कर बड़ी हुई थी कुछ ही दिन में ॥
बौड़म ने जब उस पर अपना ध्यान जमायो ।
हाथी वाला रोग घुसा नानी में पाया ॥
बोले—"नानी ! दवा मुझे इसकी आती है ।
राम राम तू इसमें ही पिघली जाती है ॥
अभी तुझे चंगा कर देता हूँ मैं नानी ।
ज़रा मिलेगा कष्ट नहीं कुछ ज्यादा हानी ॥
दोनों आँखें मूँद लेट जा चित्त अभी तू ।
करता हूँ मैं दवा न होगी दुखी कभी तू" ॥
सुन ये बातें आँख मूँद जब लेटी नानी ।
ले आया घन पीट चला बौड़म मनमानी ॥
बही रक्त की धार मरी बुढ़िया बेचारी ।
मूँदे ही वह आँख दूसरे लोक सिधारी ॥
हाथ मींज रहगया बहुत बौड़म पछताया ।
भाग गया,घर छोड़ नहीं फिर मुँह दिखलाया ॥

—लक्ष्मीकान्त बर्मा

हैं। कई कई आदमी साथ ही साथ नाचते हैं। इनका सरदार भी नाच को सफल करने की बड़ी कोशिश करता है और ख़ुद भी उसमें भाग लेता है।

न्यू हेवराइडस और न्यूसेलेडेनिया के लोग भी ऐसे ही हैं पर बोलचाल और रहन सहन में कुछ थोड़ा थोड़ा अन्तर है। न्यूसेलेडेनिया के लोगों में आदमियों के खाने की आदत अधिक पाई जाती है।

दूसरे अङ्क में मेलीनेशिया द्वीप के न्यूगिनी के लोगों का हाल बताया जायगा।

—श्रीनिवास शुक्ल

नाटी

—:o:—

आओ कथा अजीब सुनावें,
हाल विलायत का बतलावें।
सर्दी वहाँ बड़ी खलती है,
दिन में भी चिमनी जलती है॥

विधवा एक वहाँ थी नारी,
नटखट थी वह सबसे भारी।
'नाटी' सब उसको कहते थे,
सब उससे सहमे रहते थे॥
उसका लड़का बड़ा दुलारा,
उससे भी ज़्यादा हत्यारा।
सब का हृदय दुखाया करता,
नहीं सजा कुछ पाया करता॥
'स्नोलक' नाम एक साहब थे,
'लाक' उन्हें पर कहते सब थे।
बहुत उन्हें सब लोग चिढ़ाते,
पर उन को हँसते ही पाते॥
लड़कों में वे खेला करते,
डंड मज़े में पेला करते।
जहां कहीं भी थे वे जाते,
भीड़ वहाँ ही खासी पाते॥
कंधे पर चढ़ गाता कोई,
सर को ढोल बनाता कोई।
कोई कान पकड़ कर ताने,
'लाक' जरा भी बुरा न माने॥

Jan 1923

जब जाड़े का मौसम आता,
बरफ ज़ोर अपना दिखलाता।
घर ही बैठ काम सब करते,
डरते बाहर पैर न धरते ।।
फिर भी मिस्टर 'लाक' न जाने,
क्यों रहते बाहर मनमाने ।
हाथ बरफ का लेकर गोला,
इधर उधर करते थे डोला ।।
भीड़ बड़ी लड़कों की आती,
गोला इनके साथ बनाती ।
इनको फिर सब मारा करते,
कुछ भी नहीं विचारा करते ।।
'नाटी' के घर अकसर जाते,
आग तापते मन बहलाते ।
पर वह इनको और चिढ़ाती,
धक्का देती चपत जमाती ।।
उसका वह लड़का हत्यारा,
बहुत 'लाक' को करता मारा ।
एक राज वे थके थकाये,
'नाटी' के घर ज्योंही आये ।।

लड़के से यों बोली माता,
"मिस्टर लाक इधर है आता ।
चुपके चुपके पीछे जा तू,
गोला बना बरफ का ला तू ।।
मुझसे जब वह बात करेगा,
सर से टोप उतार धरेगा ।।
खुली चाँद की सीध लगाना,
तड़ तड़ तड़ दो चार जमाना ।।"
ऐसी माँ से आज्ञा पाकर,
खुशी खुशी वह बाहर आकर ।
बड़ी बरफ़ की गेंद बनायी,
उनके सर की सीध लगायी ।।
तब तक साहब घर में आये ।
धीरे धीरे कदम बढ़ाये ।।
'नाटी' को लख टोप उतारा ।
गेंद इधर लड़के ने मारा ।।
किन्तु झुक गये थे कुछ ज्यादा ।
था स्वभाव अति सीधा सादा ।।
अतः चोट नाटी ने खायी ।
यों साहब ने चाँद बचायी ।।

फूटी आँख हुई वह कानी।
याद उसे अब आई नानी॥
छूट गया नटखटपन सारा।
साहब ने यों उसे सुधारा॥

—श्रीनाथसिंह

जीव-संसार

—:o:—

वानर

ओराङ्ग

यह वानर एशिया-खण्ड का वासी है और बोर्न्यू तथा सुमात्रा नामक टापुओं में पाया जाता है। गोरिल्ल और शिम्पांजी की अपेक्षा इसकी बनावट मनुष्य से कुछ कम मिलती है। इसकी ऊँचाई साढ़े चार फुट तक होती है। इसकी टाँगे छोटी और कुछ मुड़ी हुई होती हैं। इसका माथा आदमी के समान ऊँचा होता है। नाक चपटी और कान आदमी की तरह होते हैं। इसकी पसलियाँ गिनती में आदमी के बराबर ही होती हैं। रंग इसका भूरा और कुछ स्याह होता है। इसके भी पूँछ नहीं होती।

जीव-संसार

जङ्गलों में ओराङ्ग

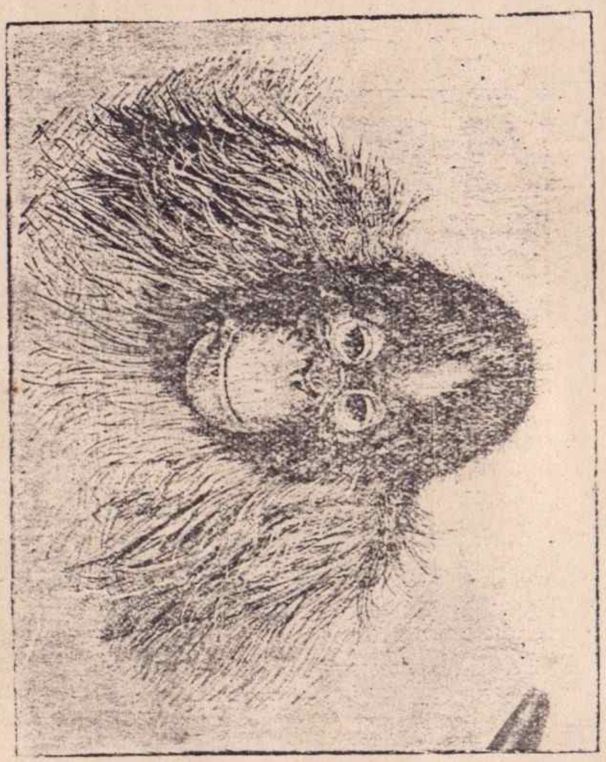

ओराङ्ग का चेहरा

यह पेड़ों पर ही रहता है। जमीन पर यह बहुत भद्दे ढँगसे भचक भचक कर चलतो है। परन्तु पेड़ों पर यह बड़ी सरलता से चलता फिरता है और लम्बी लम्बी कुलाँचे भी मारता है।

बचपन में यह सीधा होता है और सिखाने से कुछ खेल भी करने लगता है पर जब यह पूरी जवानी में पहुँचता है तो जिद्दी और भयानक होजाता है।

ठंढे देशों में जाने पर यह कम्बल वगैरह ओढ़ना सीख लेता है। एक बार एक ओरांग पकड़ कर विलायत भेजा जारहा था। जब वह योरप के समीप पहुँचा और सरदी लगी तब जहाज़ के मल्लाहों के कपड़े उठा उठा कर ओढ़ने लगा और छीनने पर बड़ी कठिनता से कपड़े उससे मिलते थे।

जंगल में तो यह पेड़ के पत्ते और फल खाकर ही रहता है पर पालने पर सब चीजे़ खाने पीने लगता है।

ओराङ्ग कभी दस पाँच मिलकर बन में नहीं रहते। स्त्री और बच्चों के सिवा औरों के साथ नहीं रहता। वृक्षों पर रहने के लिये यह भी मचान बनाता है और उसी पर चुपचाप आलसी की तरह बैठा रहता है। जब बहुत ही आवश्यकता होती है--जैसे भूख प्यास मिटाने के लिये अथवा शत्रु आदि से बचने के लिए—तब यह अपना

स्थान छोड़ता है। सच पूछो तो जंगल में यह साधू सा रहता है न कोई जीव इसको सताता है और न किसीको यही सताता है। हाँ, इसका शत्रु यदि कोई जीव है तो वह मगर है। पेड़ों पर जब पर्याप्त फल आदि नहीं मिलते तो नदी के किनारे के फलों को खाने के लिए यह जाता है। वहाँ कभी कभी मगर इसको पकड़ने को आता है। परन्तु यह मगर से नहीं डरता। उसकी पीठ पर चढ़ बैठता है और हाथों और पावों से उसको खूब पीटता है और उसका मुँह पकड़ कर चीर डालता है।

आदमी पर यह हमला नहीं करता, यदि करता भी है तो बहुत कम।

जब पाला जाता है तो बहुत यह दिनों तक जीवित नहीं रहता, जल्दी ही मर जाता है। पर जंगलों में स्वतंत्रता से रहने पर बहुत दिनों तक जीता है! बुद्धि में यह शिम्पाँजी से बढ़कर नहीं होता।

(शेष फिर)

खेल तमाशा

चढ़ा पेड़ पर बीन बजाता। देखो यह कैसा इतराता॥

January 1923

मनुष्य-संसार

सोलोमन द्वीप समूह

बालको ! पहले तुम्हें हमने फ़िज़ी द्वीप के निवासियों का हाल बताया था। अब मेलीनेशिया के एक दूसरे द्वीप समूहके लोगों का हाल बतायँगे। इस द्वीप समूह का नाम सोलोमन द्वीप समूह है। इस द्वीप समूह में मुख्य चार द्वीप हैं। उन चारों के नाम ये हैं। (१) बिसमार्क, (२) सन्टाक्रज़, (३) न्यू सेलेडेमिया और (४) न्यू हेबराइडस इन्हीं द्वीपों के लोगों का हाल हम आज तुम्हें बतायँगे। इन्हीं सब का एक नाम सोलोमन द्वीप समूह है।

यह द्वीप समूह भी अंग्रेज़ों के अधिकार में है। इनमें से एक या दो ऐसे द्वीप भी हैं जो स्वतन्त्र हैं। पहले पहल यहाँ के लोग बाहरी लोगों का कुछ भी विश्वास नहीं करते थे। पर अब जब से उनमें कुछ सभ्यता का विकाश हुआ तब से ये बाहरी लोगों के साथ व्यापार आदि करने लगे हैं और उनका विश्वास भी करने लगे हैं। यहाँ पर योरप के पादरी लोग इसाई धर्म का प्रचार कर रहे हैं और बहुत से बाशिन्दे ईसाई हो भी गये हैं।

मनुष्य-संसार

सोलोमन द्वीप का पुरुष